بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

सारांश ख़ुतबा जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ बयान फ़र्मूदा 28 मार्च 2025, स्थान मस्जिद मुबारक, इस्लामाबाद,यू.के.

# रमज़ानुल मुबारक के सम्बन्ध में हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. के विवेक पूर्ण कथनों के प्रकाश में जमाअत के दोस्तों को स्वर्णीय उपदेश।

Mob: 9682536974 E.mail. ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-28.03.2025

محلہ احمدیہ قادیان پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اما بعد فاعوذ باللہ من الشیطن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिह: की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम

अल्लाह तआला ने हमें तौफ़ीक़ दी है कि हम इस रमज़ान में से गुज़रे। अल्लाह तआला का यह उपकार है कि उसने हममें से अधिकांश लोगों को रोज़ा रखने एवं इबादत करने की तौफ़ीक़ दी। लेकिन इसके साथ ही हमें इस ओर भी ध्यान देना चाहिए कि केवल रमज़ान के रोज़े रखने तथा इबादतों से हमारा उद्देश्य पूरा नहीं हो गया बल्कि अल्लाह तआला ने हमें यह निर्देश भी दिया है कि तुमने सदेव के लिए मेरे इबादत गुज़ार बन्दे बनना है। अतः जिन लोगों को इस रमज़ान में इबादत करने का सामर्थ्य मिला है उनका अब यह कर्त्तव्य है कि नेकियों को जारी रखें, इसके लिए दुआ भी करें और कोशिश भी।

जिस प्रकार रमज़ान महत्त्वपूर्ण है, उसी प्रकार हर नमाज़ एवं जुमः महत्त्वपूर्ण है। यह नहीं कि रमज़ान का अन्तिम जुमः है तो बरकत वाला है, ऐसा नहीं! हर जुमः महत्त्वपूर्ण तथा बरकत पूर्ण है। इस ज़माने में अल्लाह तआला ने हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को भेजा और हमें उन्हें मानने की तौफ़ीक़ मिली है। आप अलै. ने हमें समझाया है कि किस तरह हम एक अच्छे मोमिन और आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के एक अच्छे उम्मती बन सकते हैं। आप अलै. एक अवसर पर फ़रमाते हैं कि मैंने कई बार अपनी जमाअत को कहा है कि तुम मेरी इस बैअत पर ही भरोसा न करना, इसकी मूल तक जब तक न पहुंचोगे तब तक मुक्ति नहीं। यदि अनुयायी स्वंय क्रियाशील नहीं तो गुरु की दिव्यआत्मा उसे कुछ भी लाभ नहीं देती। फ़रमाया- मैंने एक किताब लिखी है, कश्तीय नूह, इस किताब को बार बार पढ़ो। अल्लाह तआला तो फ़रमाता है कि वह आदमी कामयाब हो गया जो

पाक हो गया, जब इस पर अमल करोगे तब ही लाभ होगा। हज़ारों चोर, व्यभिचारी, दुष्ट, शराबी, बदमाश यह दावा करते हैं कि वे आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत में से हैं, किन्तु क्या वास्तव में वे ऐसे हैं? क्या वे हक़ रखते हैं कि आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के उम्मती कहला सकें? कदाचित नहीं। उम्मती वही है जो आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की शिक्षाओं पर पूरा अमल करे।

आप अलै. ने फ़रमाया कि इस जमाअत में यदि दाख़िल हुए हो इसकी शिक्षाओं पर अमल करो। जमाअत में दाख़िल होने के बाद कष्ट भी उठाने पड़ते हैं। यदि कष्ट न पहुंचे तो सवाब क्यूंकर है। ख़ुदा के पैग़म्बर स. ने मक्के में तेरह वर्ष तक दुःख उठाए और तुम्हें तो पता ही नहीं कि उस ज़माने के कष्ट क्या थे। अतः सदेव याद रखो कि कष्ट तो पहुँचते ही हैं परन्तु जब ये कष्ट आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम तथा सहाबा रज़ी. को पहुँच रहे थे उस समय भी आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम ने धैर्य की शिक्षा दी। इसका परिणाम क्या निकला? इसका परिणाम यही निकला कि अन्ततः दुश्मन नष्ट हो गया। तुम देखोगे कि यह जो विद्रोही लोग हैं, ये उस समय नज़र नहीं आएँगे। अल्लाह तआला ने इरादा कर लिया है कि वह इस जमाअत को दुनिया में फैलाएगा। ये लोग तुम्हें थोड़े देख कर दुःख देते हैं परन्तु जब जमाअत फैल जाएगी तो ये ख़ुद ही चुप हो जाएंगे। यही दुनिया का नियम रहा है और यही हमने नबियों की जमाअत का इतिहास देखा है।

हुज़ूर अलै. ने फ़रमाया कि धैर्य भी एक इबादत है। हमारी जमाअत ख़ुदा के समर्थन में है और दुःख उठाने से ईमान मज़बूत हो जाता है, धैर्य जैसी कोई चीज़ नहीं है। हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलै. ने तक़वा के विषय में नसीहत करते हुए फ़रमाया कि यह तो इतिहास बताता है कि आरम्भ में जो सच्चा मुसलमान होता है उसे धैर्य से काम लेना पड़ता है, सहाबियों पर भी ऐसा ज़माना आया है ..... जब इंसान तक़वा धारणा करता है तो अल्लाह तआला उसके लिए दरवाज़े खोल देता है। फिर आप अलै. ने बन्दों के अधिकारों के सम्बन्ध में फ़रमाया कि आपस में मिल जुल के बैठो, जितना तुम आपस में एक दूसरे से प्रेम करोगे उतना ही अधिक अल्लाह तआला तुमसे प्रेम करेगा। एक जगह आप अलै. ने नसीहत करते हुए फ़रमाया कि हमारी जमाअत के लिए आवश्यक है कि इस घटनाओं एवं विपत्तियों से भरे ज़माने में जबकि हर तरफ़ भटकाओ, मूर्छा तथा गुमराही की हवा चल रही है, तक़वा धारण करें।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आज के दौर में कौनसा साधन है जो बुराई की ओर ले जाने के लिए उपयोग नहीं हो रहा, ऐसे दौर में हमारा कर्त्तव्य है कि हम इन गुनाहों के रास्तों से बचने का प्रयास करें। फ़रमाय कि तक़वा ऐसी चीज़ नहीं जो केवल मुंह से कहने से प्राप्त हो जाए, बल्कि शैतान बहकाता है और तक़वा करने वालों को भी पता होता है, उसी से इंसान की कमज़ोरी का पता चलता है। अतएव तक़वा पर चलने वालों को बहुत फूँक फूँक कर क़दम उठाना पड़ता है, यह उसी समय हो सकता है जब इंसान को विश्वास हो कि सारी शक्तियों का स्रोत ख़ुदा तआला की ज़ात है। फ़रमाया कि मुत्तक़ी बनने के लिए अनिवार्य है कि बाद इसके कि मोटी बातों, जैसे कि व्यभिचार, चोरी, किसी के अधिकारों का हनन, दिखावा, अहंकार, कंजूसी, घृणा इत्यादि को छोड़ने में पक्का हो, अनैतिक आचरण

से बच कर उनके मुक़ाबले पर उच्च नैतिक आचरण में प्रगति करे। परन्तु केवल इतना पर्याप्त नहीं बल्कि आवश्यक है कि इसके मुक़ाबले पर अच्छे आचरण पैदा हों तो फिर वास्तविक तक़वा है।

नेकियों में आगे बढ़ने के लिए जो अन्य चीज़ें अनिवार्य हैं उनमें लोगों के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार, प्रसन्न चित्त, सहानुभूति करना, फिर ख़ुदा तआला के साथ सच्ची वफ़ा और निष्ठा दिखाना, इन बातों से इंसान मुत्तक़ी कहलाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि ऐसे लोगों का ख़ुदा तआला स्वंय रक्षक हो जाता है क्यूंकि अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाता है कि उनपर कोई भय नहीं होगा और न वे दुखी होंगे। एक अन्य स्थान पर फ़रमाया कि वह नेक लोगों का ही संरक्षक बनता है। हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं- अपने दिलों में ख़ुदा तआला की मुहब्बत और महानता का सिलसिला जारी रखो और उसके लिए नमाज़ से बढ़ कर और कोई चीज़ नहीं, असल चीज़ यही है कि अल्लाह तआला के समक्ष अपनी नेकियाँ पेश की जाएं और उसका हक़ अदा किया जाए और इसके लिए सबसे उत्तम चीज़ नमाज़ है। फ़रमाया कि रमज़ान में से हम गुज़रे, नमाज़ों की हालत में से हम गुज़रे, नेकियों की हालत से हम गुज़रे, अब इनको रमज़ान के बाद जारी रखना, अल्लाह तआला की रहमत को ग्रहण करने के लिए ज़रूरी है। हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने फ़रमाया कि रोज़े तो एक साल के बाद आते हैं, ज़कात समृद्ध लोगों को देनी पड़ती है, वह भी एक नेकी है, परन्तु नमाज़ है कि हर एक स्तर के आदमी को पांच समय अदा करनी पड़ती है, उसे कदाचित बर्बाद मत करो, उसे बार बार पढ़ो और इस विचार के साथ अदा करो कि मैं ऐसी शक्ति के सामने खड़ा हूँ कि यदि उसका इरादा हो तो वह अभी क़ुबूल कर ले।

हुज़ूर अलै. ने फ़रमाया कि हमारी जमाअत के लिए इसी बात की ज़रुरत है कि उनका ईमान बढ़े, अल्लाह तआला पर सच्ची आस्था और ज्ञान पैदा हो, नेक कर्मों में सुस्ती और उकसाहट न हो, क्यूंकि यदि सुस्ती हो तो फिर वज़ू करना भी एक कठिनाई लगता है, तहज्जुद तो क्यूंकर पढ़ सकता है। यदि सुन्दर कर्मों का सामर्थ्य पैदा न हो और भलाई के कामों में प्रतिस्पर्धा की भावना न हो तो हमारे साथ सम्बन्ध जोड़ना निर्र्थक है। फ़रमाया- हमारी जमाअत में तो वही दाख़िल होता है जो हमारी शिक्षा को अपनी कार्य-शैली बना लेता है और अपनी हिम्मत और कोशिश के अनुसार इस पर अमल करता है और जो व्यक्ति केवल नाम रख कर शिक्षा के अनुसार अमल नहीं करता, वह याद रखे कि ख़ुदा तआला ने इस जमाअत को एक विशेष दल बनाने का फ़ैसला किया है और कोई आदमी केवल नाम लिखवाने से जमाअत में नहीं रह सकता। इस लिए जहां तक हो सके अपने कर्मों को उस शिक्षानुसार करो, जो दी जाती है। फ़रमाया कि कर्म पंखों के समान हैं कर्मों के बिना इंसान रूहानी उड़ान नहीं भर सकता। ख़ुदा तआला के साथ प्रेम का अभिप्रायः क्या है? हुज़ूर अलै. फ़रमाते हैं कि इसका अभिप्रायः यही है कि अपने माता पिता और अपनी पत्नी और अपनी संतान और अपनी आत्मा, हर चीज़ पर अल्लाह तआला की ख़ुशी को प्राथमिकता दे दी जाए। इसीलिए क़ुरआन करीम में फ़रमाया कि अल्लाह तआला को ऐसा याद करो जैसा कि तुम अपने बापों को याद करते हो बल्कि उससे भी अधिक एवं अत्यधिक प्रेम करो।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि इस रमज़ान में जहां हमने उच्च स्तरीय नैतिक आचरण और इबादतों की ओर ध्यान दिया है तो यह ध्यान अब पूरे वर्ष जारी रहना चाहिए, यह प्रयास रमज़ान के

साथ समाप्त नहीं होना चाहिए बल्कि पूरे साल जारी रहना चाहिए। जब यह कोशिश पूरे साल जारी रहेगी तो तब ही हम उस उद्देश्य को पाने वाले हो सकते हैं जो हमारे जन्म का मूल उद्देश्य है। हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि यदि दुनियादारों की तरह रहोगे तो उससे कुछ लाभ न होगा। तुम ने मेरे हाथ पर तौबा की है, मेरे हाथ पर तौबा करना एक मौत को चाहता है, ताकि तुम नए जीवन में एक अन्य जन्म को प्राप्त करो। बैअत यदि दिल से नहीं तो कोई परिणाम इसका नहीं, मेरी बैअत से ख़ुदा दिल का स्वीकार चाहता है। अतएव जो सच्चे दिल से मुझे क़ुबूल करता है, अपने गुनाहों से सच्ची तौबा करता है, ग़फ़ूरुरहीम ख़ुदा उसके गुनाहों को अवश्य क्षमा कर देता है और वह ऐसा हो जाता है जैसे माँ के पेट से निकला है, तब फ़रिश्ते उसकी रक्षा करते हैं। यदि एक गाँव में एक आदमी नेक होता है तो अल्लाह तआला उस नेक के कारण उस गाँव को विनाश से बचा लेता है। किन्तु जब विनाश आता है तो फिर सब पर पड़ता है परन्तु फिर भी वह अपने बन्दे को किसी न किसी प्रकार बचा लेता है।

हुज़ूरे अनवर ने ख़ुत्ब: के अन्त में फ़रमाया- अतः आजकल जो दुनिया के हालात हैं उनमें हम विशेष रूप से जहां अपने आपको, अपनी नस्लों को और दुनिया को बचाने की कोशिश करें और तौहीद को दुनिया में क़ायम करने के लिए प्रयास करें, आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम के झंडे तले लाने का प्रयत्न करें, वहाँ इसके लिए हमें अपने आप में एक विशेष बदलाव स्थाई रूप में पैदा करना होगा और निरन्तर दुआओं को अपने जीवन का अंश बनाना होगा ताकि हम अपने आपको भी सुरक्षित कर सकें और दुनिया को भी सुरक्षित रख सकें क्यूंकि दुनिया बड़ी तेज़ी से विनाश की ओर जा रही है और अल्लाह तआला चाहे तो दुनिया के सुधार के लिए साधन पैदा कर सकता है कि इनके दिल फेर दे और इस विनाश से वे बच सकें और विनाश आना भी है तो अल्लाह तआला फिर मोमिनों को, ईमान लाने वालों को उससे बचाए और उससे बचने के लिए ज़रूरी है कि हम अपने कर्मों के द्वारा अपने काम उस विधि पर ढालें, उस तरह अदा करें कि अल्लाह तआला की कृपा हम पर सदा बनी रहे। ख़ुदा करे कि हम इस बात का वास्तविक बोध भी प्राप्त करने वाले हों कि किस तरह हमने अपनी इबादतों को जीवित रखना है, किस प्रकार हमने अल्लाह तआला से सम्बन्ध स्थापित करना है, किस प्रकार हमने तक़वा पर चलना है, किस तरह हमने उच्चतम आचरण दिखाने हैं, किस तरह हमने तौहीद को दुनिया में क़ायम करना है और किस तरह हमने दुनिया को विनाश से बचाना है, किस प्रकार हमने अपने आपको दुनिया के विनाश एवं हमलों से बचाना है और जब ये चीज़ें होंगी और यह भावना हमारे भीतर पैदा होगी तो फिर ही हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत का हक़ अदा करने वाले होंगे। ख़ुदा करे कि हम यह बैअत का हक़ अदा करने वाले हों और यह रमज़ान हमारे लिए बरकतों का स्रोत बनने वाला हो। हमें अपनी रहमतें एवं बरकतें प्रदान करे और हमारे रमज़ान के आने वाले दिन और पूरा साल और अगले रमज़ान तक हम अल्लाह तआला की इबादत का हक़ अदा वाले हों, उसके बन्दों का भी हक़ अदा करने वाले हों। अल्लाह तआला हमें इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ
وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ
وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652
टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमात, पंजाब- 18001032131